490 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 41
एकादशम् अंक
जून 2019

इस अंक में...

12 सम्पादकीय
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
20 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
29 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य
34 नवीनतम सामान्य ज्ञान
39 खेलकूद
44 रोजगार समाचार
45 युवा प्रतिभाएं
51 सिविल सेवा परीक्षा 2018 में एक बार फिर हिन्दी माध्यम का परिणाम आशानुरूप नहीं
53 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
55 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
58 विश्व परिदृश्य
64 स्मरणीय तथ्य

फोकस

68 (1) वित्तीय समावेशन : ग्रामीण विकास हेतु एक सार्थक पहल
71 (2) प्रारम्भिक शिक्षा : गुणवत्ता एवं प्रभावकारिता
75 (3) रोजगारविहीन विकास : यथार्थ से मुँह मोड़ने का प्रयास
77 वैश्विक साहित्यिक आयोजन—विश्व हिन्दी सम्मेलन : परम्परा और उपलब्धियाँ
82 ऐतिहासिक लेख—असहयोग आन्दोलन से पूर्ण स्वराज्य की माँग तक
85 राजनीतिक लेख—भारत में संसदीय लोकतंत्र की सार्थकता
88 समसामयिक लेख—सिन्धु नदी जल सन्धि 1960 : भारत की वर्तमान स्थिति
90 संगीत विरासत लेख—भारतीय संगीत परम्परा का उद्भव एवं विकास
93 प्रौद्योगिकी लेख—अपार सम्भावनाओं के द्वार खोलेगा क्वांटम कम्प्यूटर
94 ड्रामा/थिएटर लेख—रूपक-उपरूपक : भेद एवं परिचय
96 कॅरियर लेख—कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट
98 पर्यावरण लेख—जलवायु परिवर्तन से बचाएं धरती
100 कृषि लेख—जैविक खेती *बनाम* रासायनिक खेती
102 अन्तरिक्ष लेख—अन्तरिक्ष में भारत
104 राष्ट्रभाषा लेख—राजभाषा : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
106 सारभूत तत्व कोष
109 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान—(i) छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा, 2018
114 (ii) मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सहायक कुलसचिव परीक्षा, 2018
121 (iii) यूपीएससी सम्मिलित रक्षा सेवा परीक्षा, 2019
130 (iv) मध्य प्रदेश राज्य पात्रता परीक्षा, 2018
133 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
135 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
138 ऐच्छिक विषय मनोविज्ञान—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2018

विविध/सामान्य

149 वार्षिक रिपोर्ट 2017-18—पर्यटन क्षेत्र में मानव संसाधन विकास के बढ़ते चरण-एक दृष्टि में
151 तर्कशक्ति—आर.बी.आई. ग्रेड-B ऑफीसर (प्रा.) परीक्षा, 2018
158 मनोवैज्ञानिक/अभिरुचि परीक्षण—असिस्टेंट लोको पायलट (ALP) के लिए
167 संख्यात्मक अभियोग्यता—ई.एस.आई.सी.सामाजिक सुरक्षा अधिकारी परीक्षा, 2018
171 क्या आप जानते हैं ?
172 अपना ज्ञान बढ़ाइए
173 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—ईमानदारी से बड़ी कोई विरासत नहीं
175 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—479 का परिणाम
176 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक 191

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सम्पादकीय

चुनौती बनिए, चुनौती स्वीकार कीजिए

चला जाता हूँ हँसता-खेलता मौज-ए-हवादिस से,
अगर आसानियाँ हों, जिन्दगी दुश्वार हो जाए ।।
– असगर गोंडवी

ऋषि वशिष्ठ के ब्रह्मदण्ड द्वारा पराजित विश्वामित्र ने ब्राह्मणत्व की प्राप्ति के लिए तपस्या की और वह अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हुए. समस्त देवताओं ने पूरी शक्ति के साथ विश्वामित्र की तपस्या भंग करने का प्रयत्न किया था, परन्तु वे विश्वामित्र को उनके मार्ग से विचलित नहीं कर सके थे. जो देवता विश्वामित्र के विरोधी थे, वे ब्रह्मा जी के पास जाकर यह कहने को विवश हुए कि–हम किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो गए हैं, महर्षि विश्वामित्र के तेज से सूर्य की प्रभा फीकी पड़ गई है. ये महाकान्तिमान मुनि अग्नि स्वरूप हो रहे हैं. × × आदि. अन्ततः ब्रह्माजी को विश्वामित्र के पास जाकर कहना पड़ा 'तुमने अपनी उग्र तपस्या से ब्राह्मणत्व प्राप्त कर लिया है.''

तदुपरान्त स्वयं वशिष्ठ जी ने विश्वामित्र का ब्रह्मर्षि होना स्वीकार कर लिया और उनके साथ मित्रता स्थापित कर ली.

विश्वामित्र के पास अस्त्र, शस्त्र आदि बाह्य साधन नहीं थे, उन्होंने अपनी अन्त-र्निहित शक्तियों का विकास करके ब्रह्माण्ड को विचलित कर दिया था. इस प्रकार की शक्तियाँ हमारे व्यक्तित्व में भी समाहित हैं, परन्तु हम उनका विकास नहीं कर पाते हैं. कारण यह है कि हम जीवन में आने वाली चुनौतियों को स्वीकार करते हुए झिझकते हैं, परन्तु चुनौतियाँ झकझोर कर हमारी अन्तर्निहित शक्तियों को प्रकट करती हैं.

इतिहास प्रमाण है कि प्रत्येक देश के महापुरुषों की एक सामान्य विशेषता रही है–वे चुनौतियों को स्वीकार करने में कभी पीछे नहीं रहे हैं. प्रत्येक चुनौती किसी महान कार्य को करने के संकल्प की अपेक्षा करती है. जो चुनौती को स्वीकार कर लेते हैं, वे महानता का वरण करते हैं और इतिहास पुरुष अथवा महान व्यक्ति बन जाते हैं. मोहन दास करमचन्द गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में यदि प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करने के अधिकार को प्राप्त करने के नाम पर श्वेतों की सल्तनत को झुकाने की चुनौती स्वीकार न की होती, तो वह महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता, बापू आदि अभिधानों को कदापि प्राप्त न हुए होते.

चुनौती स्वीकार करने वाला व्यक्ति स्वयं भी चुनौती बन जाता है, क्योंकि विरोधी शक्तियाँ उसको सफल न होने देने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद-समस्त मार्ग अपनाती हैं, परन्तु सच्चे प्रणधारी को विश्व की कोई भी शक्ति विचलित नहीं कर पाती है. उदयपुर के राणा प्रताप परम शक्तिशाली मुगल सम्राट अकबर के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बन गए थे, और उसकी आँखों में आजन्म खटकते रहे थे. कारण यह रहा कि राणा को टूटना मंजूर था, परन्तु झुकना, यानी अपने दृढ़ निश्चय से डिगना मंजूर नहीं था. फलतः महाराणा भारत की स्वतन्त्रता एवं देशभक्ति की अस्मिता के रूप में आज भी पूज्य हैं और युगों तक स्मरणीय एवं आराधनीय बने रहेंगे.

●●●